(ज्ञान की आवश्यकता एवं महत्व)
(Needs and Importance of Knowledge)

ज्ञान की शिक्षा में प्रमुख रूप से आवश्यकता होती है। ज्ञान के अभाव में बालको का विकास अवरुद्ध हो जाता है —

1- चरित्र के विकास के लिए — चरित्र के विकास के लिए मनुष्य को यह आवश्यक है कि बालो के विभिन्न प्रकार के व्यवहारिक एवं परिचयात्मक ज्ञान से परिचय कराया जाय बालो को विभिन्न प्रकार के वैदिक शिक्षा सम्बन्धी पुस्तको का अध्ययन कराया जाये।

2- व्यवसायिक विकास हेतु — व्यवसायिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक द्वारा बालो को कौशलात्मक ज्ञान प्रदान किया जाये। जैसे- बालक को अपने जीवन यापन के लिए विभिन्न प्रकार के व्यवसायों का चयन करना पड़ता है। इस व्यवसाय के आधार पर बालो मे व्यवसाय से सम्बन्धित कौशलो का विकास करना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

3. उच्च जीवन स्तर के लिए -:

विभिन्न प्रकार के तथ्यात्मक एवं कौशलात्मक ज्ञान के माध्यम से छात्रों का जीवन उच्च स्तर तक होता है। जैसे व्यक्ति यदि कोई रोजगार करना शुरू कर दिया उससे सम्बन्धित जो कौशल प्राप्त होता है वह उसके द्वारा अपना जीवन यापन कर सकता है।

4. शारीरिक विकास के लिए -:

शारीरिक विकास के लिए अब आवश्यक है कि छात्र के विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास किया जाये। विद्यालय में विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया जाये। और उससे सम्बन्धित शारीरिक क्रियाओं का आयोजन किया जाये। ज्ञान के माध्यम से शिक्षक यह जान जाता है कि प्राथमिक स्तर पर शारीरिक विकास के किन-2 खेलों का विद्यालय व्यवस्था को ज्ञान मिलना चाहिए।

Scanned with CamScanner

DATE / /
PAGE NO.

5- शिक्षण अधिगम प्रभावशीलता के लिए -: शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के विकास के लिए छात्रों में अधिगम कौशल का विकास होना चाहिए। तथा शिक्षक को समस्त शिक्षण कौशल का ज्ञान होना चाहिए। बेड कोर्स के शिक्षण कौशल के रूप में शिक्षकों को प्रस्तावना कौशल, व्याख्यान कौशल, श्यामपट्ट लेखन कौशल ज्ञान प्रमुख रूप से प्रदान किए जाते हैं।

6- समायोजन क्षमता के शिक्षण हेतु -: समायोजन क्षमता के विकास के ज्ञान बढ़ाने के रूप में निहित होता है। क्योंकि ज्ञान के आधार पर बालक के विभिन्न व्यवहारों का पता चलता है।

सामान्य ज्ञान एवं विशिष्ट ज्ञान में तुलना -

सामान्य ज्ञान एवं विशिष्ट ज्ञान की तुलना को निम्न लिखित दो प्रकारों से विभक्त किया है।

सामान्य ज्ञान -

(i) सामान्य ज्ञान का सम्बन्ध इस भौतिक जगत से होता है।

(ii) सामान्य ज्ञान सम्बन्धी विषय वस्तु को हम प्रत्यक्ष रूप से अपनी इंद्रियों द्वारा देख सकते हैं।

(iii) सामान्य ज्ञान का सम्बन्ध लौकिक (परा) जगत से होता है।

विशिष्ट ज्ञान -

(i) विशिष्ट ज्ञान का सम्बन्ध आध्यात्मिक जगत से होता है।

(ii) विशिष्ट ज्ञान को हम आँखों से देख नहीं सकते हैं।

(iii) विशिष्ट ज्ञान का सम्बन्ध अलौकिक अपरा जगत से होता है।

(iv) विशिष्ट ज्ञान केवल है योग, साधना के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner